आखर हिंदी पत्रिका e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 4/दिसंबर 2022
Received: 09/12/2022; Accepted: 12/12/2022; Reviewed: 17/12/2022 Published: 24/12/2022

समाधि की हद सरहद

- हिमा एम.एन.
शोध छात्रा
केरल विश्वविद्यालय
हिन्दी विभाग
तिरुवनंतपुरम
ई मेल :himamnarendran@gmail.com

हिमा एम.एन., समाधि की हद सरहद, आखर हिंदी पत्रिका, खंड2/अंक 4/दिसंबर 2022,(316-324)

सारांश : विश्व साहित्य के ऊँचे शिखर पर भारतीय साहित्य, विशेषकर हिंदी साहित्य को अपना अस्तित्व प्रदान किया है 'रेत समाधि'। यह हिंदी की पहली ऐसी किताब है जिसे अंतरराष्ट्रीय बुक्कर प्राइज़ मिला है। रिश्तों के ताने - बाने में यह उपन्यास कई मुद्दों पर कटाक्ष करता है। समाज और स्त्री को केंद्र में रख कर समस्याओं से टकराव, सीमाओं का उल्लंघन, प्राकृतिक वातावरण आदि के सम्मिलित सौन्दर्य से इसकी कथानक को अविभाज्य बना दिया है। माँ-बेटी की रिश्ते को बड़ी बारिकी से प्रतिष्ठित कर इसकी कथानक को विकसित किया गया है। माँ की देखभाल में बेटी माँ बन जाती है और माँ बेटी। असीम प्रेम के सौगंध्य को फैलाकर 'रेत समाधि' व्यक्ति से देश- विदेश की सरहदों को पार करती है। इस लंबी सफर में कभी इतिहास गवाह है तो कभी किरदार। उत्तराधुनिक परिवेश में शैली,कथन और प्रयोग से 'रेत समाधि' ने एक नए प्रतिमान को रूपायित किया है उसकी नब्ज़ पकड़ कर समाज द्वारा गठित समाधि की हद सरहदों के छानबीन करना इस लेख का उद्देश्य है।

मुख्य शब्द : पितृसत्ता, मस्क्युलरिटी, फेमिनीज़म, साँस्कृतिक, आधिपत्यवाद (hegymony), अलगाववाद(separatism), राजनीतिक संस्कृति(political culture), साम्प्रदायिकता, चेतना प्रवाह(stream of consciousness)

प्रस्तावना:

साहित्य अपने आप में एक एक्सपेरिमेंट है। उसकी दागे पकड़ने और उसको आकार देने की कोशिश में रचनाकार अनोखी भाषा गठती हैं। वैश्विक स्तर पर हिंदी साहित्य के पाठक वर्ग को बरक़रार रखने का एक प्रयास है 'रेत समाधि'। हिंदी की विविध रूपों और, शैलियों से सजा इसकी विस्तृत कथानक को पढ़कर मन अटक जाता है कि हिंदी के उन शब्द कहीं तो अनसुने है कहीं परिस्थिति के मुताबिक नए गठे हुए है। यह उपन्यास शब्दों का मायाजाल बुनने का नायाब नमूना है। इसे पढ़कर ताज्जुब होता है कि इन हिंदी शब्दों का ठीक अंग्रेजी अनुवाद कितना मुश्किल रहा होगा ।पढ़ते वक्त यह सोचना मुश्किल हो जाता है कि क्या इसका अंग्रेजी अनुवाद संभव है? लेकिन डेज़ी रॉक्वेल ने विश्व पटल पर अनुवाद का महत्व उजागर करते हुए 'Tomb of sand' प्रस्तुत किए हैं।

उपन्यास का शीर्षक है ' रेत समाधि'।यह शीर्षक उपन्यास में चित्रित कथा की कई बातों से बारीकी संबंध रखता है।" फिर भी समाधि का अस्तित्व मिटाना दुर्लभ।"1 वह नश्वरता का दर्शन बन जाती है।" ये तो बस बैठ रहती, ध्यान मुद्रा में, और धीरे-धीरे उन्हें रेत प्रपात ढकते जाते और वह ढकी रहती है। जब तक ढके रहना होता है।"2 जिसमे कुछ भी कब्र नही बनती, बल्कि बनती है समाधि।जब हल्की सी हवा में रेत उड़ती है तब समाधियों में से कहानियाँ निकलेगी। जैसे इस उपन्यास की बूढ़ी औरत की तरह। वह संयुक्त परिवार की दादी है,माँ है। शुरू में ऐसा लगता है कि उसका जीवन दब गई है। मगर फिर उसकी भी कहानी उस रेत से उभरती है। तरह तरह की औरत की कहानी उन में से बनती हैं। उपन्यास में एक वाक्य दृष्टव्य है, "उसने हजार गायों के दूध का अर्क उनके मुंह में डाला इस कारण बुद्ध लौट पाए और न रेत, न जल वरण मध्यमार्ग को सर्वोच्च घोषित कर गए। मगर जल समाधि और रेत समाधि के आध्यात्मिक प्रकाश पुंज ने उनके चेहरे को हर उनकी छवि, उनके बुत, उनकी स्मृति को उज्जवल किया।"3 किताब का असर सूफ़ियाना से भी है और बौद्ध दर्शन के मध्यमार्ग से भी।

रेत समाधि की भाषा पर कृष्णा सोबती ने एक ऐसे तथ्यात्मक टिप्पणी दी है जो बिल्कुल शुद्ध है। वह लिखती है, "भारतीय स्थापत्य और समय काल की सीमाओं को प्रस्तुत करता है रेत समाधि का पाठ; जो कभी उद्वेलित करता है और कभी दोनों के साँझेपन में एक ऐसी स्थिति प्रस्तुत करता है जो एक साथ नए और पुराने विन्यास का प्रतिबिंब है-यह अद्भुत है। इस पाठ की मानवीय विविधता ऐसी कि वह पाठक को न मात्र नई लगती है और न निरी प्राचीन। रेत समाधि का प्रतीक और आत्मिक भाषा विकास अनजाने में ही एक दूसरे की स्थापनाओं का आधार बनते हैं।"4

यहां अम्मू के जीवन का एक बड़ा हिस्सा खोलता है। अम्मू को जानने समझने की एक व्यापक फलक मिलती है। मोह, जीवन, सरहदें, समाधि, स्वत्व आदि की परिभाषाओं को तलाशने के क्रम में यह उपन्यास ज़िन्दगी के भीतर से गुज़रता हुआ दिखाई पड़ती हैं। दो पीढ़ियों के मानसिक संघर्ष के आड़ में एक दूसरे को मानने से कहीं ज्यादा जानने की कहानी बन जाती है। "समय कैसे काल बन जाता है। एक दौर में सीढ़ियाँ चढ़ी जाती हैं।दूसरे में उतरी जाती हैं।ऐसा कोई नही जो हमेशा एक सा दमकता रहे"।5 यह तो कुदरत का नियम है। गीतांजलि श्री ने जीवन की इस साधारण दर्शन को असाधारण मोड़ देकर साधारण में असाधारण को प्रतिध्वनित करती है।

संयुक्त परिवार की कहानी, साधारण मध्यम वर्ग के किरदार, जिसमें मां है बेटी है बड़े बेटे है,भाई है। हरीश त्रिवेदी ने ठीक ही लिखा है "मितभाषी अफसर बेटा, स्वच्छन्द मूखर बेटी, सेवा करती पर कुढ़ती रहती बहू और उनके पारस्परिक बोल बर्ताव रेशे-रेशे का ऐसा सूक्षम मनोवैज्ञानिक पर साथ ही व्यंग विनोदपूर्ण और मनोरंचक चित्रण हिंदी में ही क्या अन्यत्र भी दुर्लभ है। जिस तरह समाज में बुर्जुआ वर्ग ने सर्वहारा को अधीनस्थ कर दिया उसी प्रकार परिवार में पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती पितृसत्ता ने ऊंच-नीच को ताज की तरह कायम कर दिया।"6 जहाँ बोउवर ने ' स्त्री बना दी जाती है' के जिस रूपक का प्रयोग किया था दरअसल वह संस्कृति के दायरे में ही पूरी होती है। ग्राम्शी इस प्रक्रिया को 'सांस्कृतिक आधिपत्यवाद' के रूप में अंकित करते है। "चिल्लाना परंपरा है। बड़े बेटों का चिल्लाने का पुराना रिवाज है ।मालिकाना ढंग से।"7 उपन्यास में बड़े बेटे जिस ढंग से पिता का अनुकरण करते हैं वह संस्कृति के माध्यम से वर्चस्व को कायम रखने की रीति है। मित्रों से पार्च्ड तक पार्च्ड से धप्पड़ तक पहुँच कर भी सतही तौर पर देखा जाए तो 'मुक्तिपर्व' एक मरीचिका मात्र है।

"रिश्ते अब अदल बदल हो गए है।बेटी होकर तुम मेरी माँ बनी हो और मैं..."8 इस अधूरी आवाज़ को पकड़ कर गीतांजलि श्री ने नई सरहदे बनाई। जिसमें उन्होंने कहा, "टूटी फूटी बेचारी अम्मा ।बेटी ने अम्मा बन कर सोचा। गाला रुंधा।"9 "बेटी ने माँ बनकर माँ को बेटी बनाया और उनके माथे पर हाथ फेरा।"10 " मनोवैज्ञानिकों ने कहा है कि कमरे में और महफिल में घुसते ही जो प्रकृति कारगर होती है वही व्यक्ति रच देती है। आने वाले पल का रंग अब तय। कमरे में घुसते ही मां बिस्तर पर सो गई और बेटी मां बन गई। अब नींद से उठेगी तो एक और जीवन होगा। एक और का जीवन। बाकी तो हर किसी की अपनी दौड़ आमीन।"11 जिस तरह प्रेमचंद की अमीना, हामिद के सामने छोटी होकर सारे अनुभवों को एक साथ महसूस कर पाने की स्थिति में रो लेती है ठीक वैसे ही अम्मा और अम्मू के अन्तःकरण भी वहीं अनुभूति पा कर एक साथ रोती है।

अनुभव में समग्रता है। क्रोचे के अनुसार, "महान कलाकार सामाजिक को उसका अपना ही अन्तः दर्शन करवाते हैं।"12 अनुभव की दृष्टि से सामाजिक यथार्थ को समग्रता से अभिव्यक्ति देने के लिये रचनाकार कवित्व का अन्वेषण करता है। जिससे उसका सम्प्रेषण अधिक दक्ष होता है। रेत समाधि को कई बार कविता की तरह

पढ़ना पड़ता है। पढ़ते- पढ़ते ऐसे लगते हैं कि कविता पढ़ रहे हैं। जब कहानी का मोड लेकर कथा आगे बढ़ती है तो फिर उसकी काव्यात्मकता भी बढ़ती जा रही है। "चूर चूर होते जाने के चूरे में व्यस्त, जीवन्त। खीजती, ख़फ़ाती, संभालती, फाफाती ,साँस पर साँस पर साँस चलाती। क्योंकि सभी की साँस उसी में चलती सभी की साँस वो चलाती।" 13 यह गद्य ,पद्य की गति पकड़कर बहती है। गद्य में पद्य और पद्य में गद्य रचने की कारीगरी उसे कृष्णा जी से मिली होगी। जहँ कृष्णा जी ने जो कुछ बाकी छोड़ कर चली उसी की नब्ज़ पकड़ कर गीतांजलि जी रफ़्तार को आगे बढ़ाने के प्रयत्न में तल्लीन रहती है।

उपन्यास में रूपक अलंकार का बेमिसाल संयोजन हुआ है। दो पीढ़ियों के बीच का असमंजस को पीठ, दरवाज़े, खिड़की से बखूबी दर्शाया है। घर के बड़े इस बात से वाकिफ है कि बूढ़ों के लिए न घर में जगह, न मन में। एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी से उदास होता है। दो पीढ़ियां दरवाज़े के उस पार और इस पार खड़े है। 'खिड़की 'से लेखिका पाठक को बूढ़ी औरत की जवानी की ओर ले जाते हैं जब वह तितली की तरह खिड़की से बाहर आने जाने में स्वछन्द रही थी।" तो अपनी अम्मा की कही कह देती है, चिल्ला जाड़ा दिन चालीस, फूस के पंद्रह, माघ पचीस। चुपकी के बाद बोलो और लयदार मुहावरा बोलो तो आवाज़ गा जाती है। कुछ पी पी पिपियाती। कुछ लहरिल लहराती। कि च्च चिलल्ला ज्जजाड़ादिन चचालीस, फूस के पपन्द्रह म्माघ पपचीस।"14 भाषा के स्तर से उपन्यास में मुहावरे और पुरानी कहावतों को ढूढ़ निकालकर थोपने की प्रक्रिया नहीं बल्कि स्वाभाविक विकास की कला को दर्शाता है।

दरवाज़ा, पीठ, खिड़की, पशु-पक्षी, पेड़ आदि रूपक में प्रचुर मात्रा में इस्तेमाल करने के साथ-साथ लेखिका ने रिबॉक का जिक्र करते हुए पाठक को विस्मित करता है।" यह कौन सी उल्टी गंगा रिबॉक बहता है ? ऐसा भी लग सकता था कि एक को अपराध बोध है कि मैंने नहीं निभाया और इसलिए अब पलट के आती हैं और दूसरी को आश्वस्ति है कि मैंने खूब निभाया और इसलिए आब निकल जाती है। पर दरवाजे को या किसी और को ऐसा लगा, इसके कोई चिह्न पहचान में नहीं आए हैं। अभी तक।"15 समय की गति को पकड़ना आसान नही है। रिबॉक वक्त का प्रतिबिंब है। रिबॉक को अगर औरत के संदर्भ में समझे तो समय को पकड़ने की भाग दौड़ में वह रिबॉक शूज़ पहनते हैं। कालान्तर में परिवर्तित होती जा रही स्त्री की मनोदशा को रिबॉक के माध्यम से उत्कृष्ट रूप में प्रस्तुत किया है।

सरहद इस उपन्यास के मूल में है। वह बेजोड़ तब बन जाती है जब व्यक्ति परिवार और समाज द्वारा बनी-बनायी सत्ता संरचना को तोड़ती है। साधारण मध्य्म वर्गीय परिवार के किरदार के माध्यम से आधुनिकता और देशज आधुनिकता का अतिक्रमण करते हुए यथा कथित आधुनिक समाज के सामंती मानसिकता को उपन्यास ज़ाहिर करता है। अंततः उस बूढ़ी औरत परिवार को भी लाँघती है।

उपन्यास जितना शास्त्रीय है उतना ही रुमानी भी। काल और भौगोलिक सीमाओं को लांघ कर प्रकृति अपने अनूठे रूप में उभरती है। पेड़, झील, जीव जंतु आदि अम्मा के साझेदार बन कर उपस्थित है। बेजान वस्तुओं में जान देने का सारा परिश्रम इसमें प्रतिफलित है। स्वच्छन्दवादियों की तरह प्रकृति के एकाधिक रूपों के उन्मुक्त सौंदर्य के प्रति उनका अनवेक्षण सुगम दृष्टिगत है।

उधर काँव काँव काँव शोर मचा कर जिन कौव्वों ने अम्मू को तंग करती थी, उनमें संवेदना भरा कर गीतांजलि जी ने नई जान दिलाई। इधर कौवे की फड़फड़ाहट को लब्जों में पिरोया है। "विज्ञान के नाम पर प्रदूषण फैलाने वाली तरक्की।"16 "पैन्ट की ज़िप खोली और प्रदूषण में इज़ाफ़ा किया"17 "कौन यहाँ आया है गन्दा करने?"18 "स्वछ भारत अभियान"19 आदि कहकर कौव्वों की मुँह से वर्तमान समय की असलियत निकलता है। कभी कभार भविष्यवाणी भी। अंततः मानवेतर प्राणी ने मनुष्यता पर सवाल उठाते हैं। कौवों में मनुष्य समाज के हर तब्के के प्राधिनिधि शामिल है। चाहे वह युवा हो, बुजुर्ग हो, राजनीतिज्ञ हो या फेमिनिस्ट।

तथाकथित सभ्य समाज द्वारा दी गयी मस्क्युलरिटी की परिभाषा पर भी उपन्यास चर्चा करते हैं। स्त्री और पुरुष का तत्व हर व्यक्ति में मौजूद है। लेकिन अंतरूनी अनवेक्षण में शायद कुछ लोग लिंग की डांवाडोल में उलझ जाते हैं। अस्मिता को पाने की जद्दोजहद में अवतरित अन्य किरदारों के साथ बेहद प्रभावशाली है रोज़ी। रोज़ी या रजा?वह जीवन संग्राम में संघर्षरत होकर स्वायत्तता का प्रश्न को असरदार ढंग से रेखांकित करती है।" हम सब एक है से, बस कपड़ा, चाल, ढब, तनना या झुकना, पंगे पाँव चलना या सतर सिपाहिया गश्त, हाथ नचाना कि ऊँचा खम्बा उठान, इसी में अलग नजर आते हैं?"20

स्त्री और पुरुष की पुरानी संरचनाओं को नई संरचनाओं में तब्दील करने का समय आ चुका है। लेकिन 'चेतना' को बार - बार हाशिए पर धकेलने में 'अलगाववाद' और 'राजनीतिक संस्कृति' का भी बड़ी भूमिका रही है। दरअसल आज ट्रांसजेंडर को सामाजिक तौर पर बहिष्कृत कर दिया गया है। क्योंकि हम इसे 'विकृति' मानते हैं। इस सिलसिले में सेक्स को निर्धारित करने की समस्या स्त्री और पुरुष से ज़्यादा 'अन्य' को होता है।" ललित कलाओं लोक संस्कृति में एक अलग जिस्म है। सीमाओं को पार करता। सीमा जहां पर होती वहां संगम होता है। आदमी औरत एकमेक। बिरजू महाराज और कत्थक, जयशंकर और सुंदरी। शंकर और पार्वती। इनके मिलन जादू रचते है, अन्य बनकर, अन्य को अपना बनाकर। गांधी और ताना पालथी में बैठकर सीमा लाँघते है। लछु चाचा रसोई लाँघ के सब दिल जीतते हैं।"21

इस कृति किसी वाद या विचारधारा से ऊपर उड़कर अपनी निजी विचारों से आगे बढ़ते हुए कृत्रिमता और रूढ़ियों से विद्रोह कर वैयक्तिकता, आत्म सृजन और कल्पना शीलता की मुक्त आकाश में विराजते है।

हद सरहद तक पहुँचते-पहुँचते अतीत के उस भयावह सच्चाई खुलता है, जहां पाठक वर्ग एक बार फिर उन शख्सियतों से रूबरू होते हैं, जिन्होंने विभाजन की त्रासदी को लेकर हमें भयभीत कराया था। श्रृंखला की वे कड़ियाँ एक के बाद एक होकर पाठक के स्मृति कुंज को झकझोरती है। यहां आकर कुछ तथ्यों का भी पोल खोलता है। अस्सी के आस पास की बूढ़ी औरत अपने हकीकत के साथ खरे उतरती है। चंदा से चंद्रप्रभा तक। 'यशोदा शर्मा' को 'वर्षा वशिष्ठ' बनाने की वहीं नियति ने चंदा को चंद्रप्रभा तक कि सफर तय करायी थी। दूरी बस चाँद से चाँदनी तक की !

इसमें किसी को शक नहीं है कि रेत समाधि वर्तमान समय की रचना है। लेकिन इसके शुरुआती दौर तभी जाकर पता चलता है जब पाठक विभाजन रेखाओं से मुठभेड़ करते हैं। साम्प्रदायिकता और संस्कृतिक के घालमेल से जन्मी प्रत्येक किरदार वागा बॉर्डर पर चीखते हैं, चिल्लाते हैं। उनके लिए सरहद के कई मायने होते है। शब्दों के वर्णनात्मक विश्लेषण इस उपन्यास की सबसे बड़ी खूबी है। बॉर्डर के अर्थ-विन्यास को इस प्रकार लेखिका ने संवारा है, "क्या होता है बॉर्डर? वजूद का घेरा होता है, किसी शख्सियत की टेक होता है। कितनी ही बड़ी, कितनी ही छोटी। रुमाल की किनारी, मेजपोश का बॉर्डर, मेरी दोहर को समेटती कढ़ाई। आसमान की सरहद। इस बगिया की क्यारी। खेतों की मेड़। इस छत की मंडेर। तस्वीर का फ्रेम। सरहद तो हर चीज की है।"22 चंदा देह से व्यक्ति, व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज, समाज से भौगोलिक सीमाओं को लांघ कर' खुद को स्थापित करने की आत्मान्वेषण में मुग्ध थी। इसका प्रतीक रहा शुरुआत के पीठ। इस लंबी सफर में मां के अधूरी इच्छापूर्ति कर बेटी भी साथ दी है।

"बॉर्डर मिलन की रेखा है"।23 हल्की फुल्की सी एक प्रेम कथा, उस फ्लैशबैक में डूबकर पाठक के मन लहना सिंह और सूबेरदारनी की याद में तड़पते रहेगे।

लेखिका की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रश्नचिन्ह लगाकर 'रेत समाधि' में अश्लीलता पर काफ़ी बहस चलाई थी। मैनेजर पांडे ने ठीक ही लिखा है, "साहित्य में अश्लीलता का सवाल सामाजिक स्तर पर सदाचार की अवधारणा से जुड़ा है। लेकिन इस मे कठिनाई यह है कि स्त्री - पुरुष के लिए सदाचार के नियम और उसकी सीमाएँ अलग अलग है।"24 स्त्री समाज मे या साहित्य में क्या करना या कहना है इसे पुरुष वर्चस्ववादी समाज ने निर्धारित करके रखा है।

उपसंहार

रेत समाधि में न तो प्रेमचंद की सादगी है और ना तो मुक्तिबोध की फैंटेसी। यह परंपरागत औपन्यासिक ढाँचे को छोड़ कर संरचना के एक नए आयाम को पेश करती है। निम्न स्तरीय चेतना और उच्च स्तरीय चेतना के संयोग से युक्त पात्रों की सचेतनता को किसी भी वाद या विमर्श से जोड़ना बड़ी भूल है।

वर्जीनिया वुल्फ़ की तरह 'चेतना प्रवाह' शैली का इस्तेमाल कर उपन्यास के प्रत्येक अंश को लेखिका ने एक विशिष्ट कहानी का रूप प्रदान किया है। गीतांजलि श्री नई पीढ़ी से आह्वान करना चाहती है कि अतीत वर्तमान और भविष्य की लकीरो को पार करने की लंबी दौड़ में रिबॉक पहन कर हमें भी भाग लेना है। उस दौड़ में फिर से रेत उड़ेगी। हम में से नई कहानियाँ जन्म लेगी। हद सरहद को लाँघ कर, अनूठी कहानियाँ।

संदर्भ सूची

अ .Sree, Geetanjali.(2018)Ret Samadhi,New Delhi, Rajkamal publication,page no.85

श्री,गीतांजलि.(2018)रेत समाधि, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ,पृष्ठ संख्या 85

आ .Sree, Geetanjali.(2018)Ret Samadhi,New Delhi, Rajkamal publication,page no.85

श्री,गीतांजलि.(2018)रेत समाधि, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ,पृष्ठ संख्या 85

इ .Sree, Geetanjali.(2018)Ret Samadhi,New Delhi, Rajkamal publication,page no.85

श्री,गीतांजलि.(2018)रेत समाधि, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ,पृष्ठ संख्या 85

ई .Sree, Geetanjali.(2018)Ret Samadhi,New Delhi, Rajkamal publication,cover page

श्री,गीतांजलि.(2018)रेत समाधि, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ,कवर पेज

उ .Sobti, krishna.(2008)Ea Ladki.New Delhi.Rajkamal publication,page no.50

सोबती,कृष्णा.(2008)ऐ लड़की.नई दिल्ली.राजकमल प्रकाशन.पृष्ठ संख्या 50

ऊ .Sree, Geetanjali.(2018)Ret Samadhi,New Delhi, Rajkamal publication,cover page

श्री,गीतांजलि.(2018)रेत समाधि, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ,कवर पेज

ऋ .Sree, Geetanjali.(2018)Ret Samadhi,New Delhi, Rajkamal publication,page no 24

श्री,गीतांजलि.(2018)रेत समाधि, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ,पृष्ठ संख्या.24

ए .Sobti, krishna.(2008)Ea Ladki.New Delhi.Rajkamal publication,page no.9

सोबती,कृष्णा.(2008)ऐ लड़की.नई दिल्ली.राजकमल प्रकाशन.पृष्ठ संख्या 9

ऐ .Sree, Geetanjali.(2018)Ret Samadhi,New Delhi, Rajkamal publication,page no 125

श्री,गीतांजलि.(2018)रेत समाधि, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ,पृष्ठ संख्या 125

ओ .Sree, Geetanjali.(2018)Ret Samadhi,New Delhi, Rajkamal publication,page no.125

श्री,गीतांजलि.(2018)रेत समाधि, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ,पृष्ठ संख्या 125

औ .Sree, Geetanjali.(2018)Ret Samadhi,New Delhi, Rajkamal publication,page no.126

श्री,गीतांजलि.(2018)रेत समाधि, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ,पृष्ठ संख्या 126

अं .Croce,Benedetto.(2014)Saundarya vimarsh aur saar.New Delhi,Vaani publication,page no 19

क्रोचे,बेनेदेत्तो.(2014)सौन्दर्य विमर्श और सारनई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 19

अ: .Sree, Geetanjali.(2018)Ret Samadhi,New Delhi, Rajkamal publication,page no.12

श्री,गीतांजलि.(2018)रेत समाधि, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ,पृष्ठ संख्या 12

क .Sree, Geetanjali.(2018)Ret Samadhi,New Delhi, Rajkamal publication,page no.15

श्री,गीतांजलि.(2018)रेत समाधि, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ,पृष्ठ संख्या 15

ख .Sree, Geetanjali.(2018)Ret Samadhi,New Delhi, Rajkamal publication,page no.35

श्री,गीतांजलि.(2018)रेत समाधि, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ,पृष्ठ संख्या 35

ग .Sree, Geetanjali.(2018)Ret Samadhi,New Delhi, Rajkamal publication,page no.181

श्री,गीतांजलि.(2018)रेत समाधि, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ,पृष्ठ संख्या 181

घ .Sree, Geetanjali.(2018)Ret Samadhi,New Delhi, Rajkamal publication,page no.182

श्री,गीतांजलि.(2018)रेत समाधि, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ,पृष्ठ संख्या 182

ङ .Sree, Geetanjali.(2018)Ret Samadhi,New Delhi, Rajkamal publication,page no.182

श्री,गीतांजलि.(2018)रेत समाधि, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ,पृष्ठ संख्या 182

च .Sree, Geetanjali.(2018)Ret Samadhi,New Delhi, Rajkamal publication,page no.183

श्री,गीतांजलि.(2018)रेत समाधि, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ,पृष्ठ संख्या 183

छ .Sree, Geetanjali.(2018)Ret Samadhi,New Delhi, Rajkamal publication,page no.225

श्री,गीतांजलि.(2018)रेत समाधि, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ,पृष्ठ संख्या 225

ज .Sree, Geetanjali.(2018)Ret Samadhi,New Delhi, Rajkamal publication,page no.207

श्री,गीतांजलि.(2018)रेत समाधि, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ,पृष्ठ संख्या 207

झ .Sree, Geetanjali.(2018)Ret Samadhi,New Delhi, Rajkamal publication,page no.331

श्री,गीतांजलि.(2018)रेत समाधि, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ,पृष्ठ संख्या 331

ञ .Sree, Geetanjali.(2018)Ret Samadhi,New Delhi, Rajkamal publication,page no.331

श्री,गीतांजलि.(2018)रेत समाधि, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ,पृष्ठ संख्या 331

ट .Pandey ,Manager.(2005)Aalochna ki saamajikta.New Delhi,Vaani Publication,page no.140

पांडेय ,मैनेजर.(2005)आलोचना की सामाजिकता,नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन,पृष्ठ संख्या.140

****